भैरव पुराण एवं महायज्ञ तथा साधना शिविर

कष्ट भंजन भैरव जन्माष्टमी महोत्सव आमंत्रण

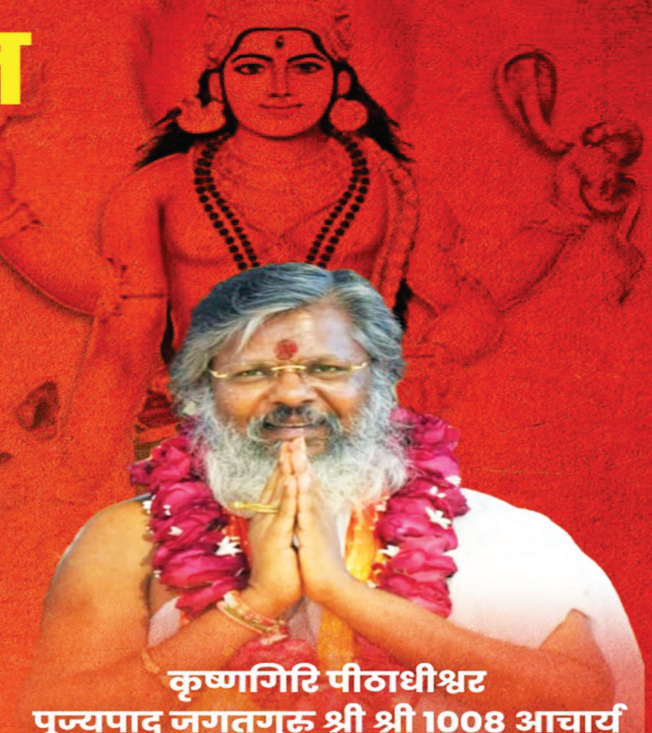

कृष्णगिरि पीठाधीश्वर
पूज्यपाद जगतगुरु श्री श्री 1008 आचार्य
श्री वसंत विजयानंद गिरिजी महाराज
के पावन सान्निध्य में

5 नवम्बर, बुधवार से 12 नवम्बर, बुधवार तक!

स्थान: टाउन हॉल मैदान, मैसूरु, कर्नाटक

प्रतिदिन सुबह 10 बजे से विशेष भैरव साधना
- दोपहर 3 बजे से कष्ट भंजन महायज्ञ
- शाम 8 बजे से भैरवपुराण महाकथा

बाहर से आने वाले भक्तों के लिये ठहरने की सामूहिक व्यवस्था एवं भोजन व्यवस्था निशुल्कः

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें - 90513-90513

समस्त कार्यक्रम निःशुल्क

आप सपरिवार सादर आमंत्रित हैं।

चमत्कारिक पूज्य गुरुदेव डॉ. वसंत विजयजी की तपयात्रा

एक नजर- पृथ्वी पर विश्व शांति व भटके युवाओं को राह दिखाना ही गुरुदेव का लक्ष्य। ● अंतरराष्ट्रीय असेंबली ने प्रदान किया है राष्ट्रसंत का दर्जा। ● जैन समाज के ऐसे पहले राष्ट्रसंत जिन्हें विदेशों में भी मिलता राजकीय अतिथि का दर्जा। ● जैन समाज के एकमात्र राष्ट्रसंत जिन्हें अमेरिका में जारी किया है रेड पासपोर्ट। ● 16 भाषाओं के ज्ञाता जिन्हें दिव्य दृष्टि से मिला ज्ञान का भंडार। ● अब तक अपनी मंत्र साधनाओ ओर माता व श्री भैरव के आशीर्वाद से 18 लाख से अधिक पीड़ितों का निदान। ● 22 सेकेंड में 56भोग का बगैर रुके नाम बोलने पर गिनीज बुक वर्ल्ड रिकॉर्ड में नाम। ● ढाई हजार से अधिक भोग लगाने व कृष्णगिरी तीर्थ में ऐतिहासिक कांच की कारीगरी पर भी वर्ल्ड रिकॉर्ड । ● सिर्फ चेहरा देखकर ही जीवन का हाल जान लेते है गुरुदेव। ● इंदौर में महामांगलिक सहित नियमित पूजा में देखने को मिला चमत्कार। ● उद्देश्य : नवरात्रि में डांडिया रास नहीं यह सृष्टि का सर्वनाश हो रहा है सिर्फ माँ की आराधना हो।

मौन साधना- श्री बसंत गुरुजी का महीनों मौन साधना का व्रत चलता है। इस दौरान वे किसी से बात नहीं करते। अपना पूरा समय उपासना में लगा देते हैं। एक-एक मंत्र का उच्चारण पूरे विधि-विधान के साथ महीनों चलता रहता है- लाखों-लाखों बार मंत्रों की पुनरावृत्ति। यज्ञ, हवन, पूजा, पाठ, अर्चना, आराधना, उपासना - सब कुछ संपूर्ण समर्पण व श्रद्धा के साथ। जप, अनुष्ठान, उपासना में संपूर्ण आस्था, विश्वास, श्रद्धा एवं आभ्यंतर पवित्रता की अपेक्षा होती है। साथ ही ध्यान करते समय निर्धारित आसन में बैठना - घंटों बैठना आवश्यक होता है। मुख्य रूप से पद्मासन, सिद्धासन या सुखासन में बैठा जाता है। खानपान संयम, शुद्ध उच्चारण, शुद्ध भावना, साधना की उपलब्धि में सहायक बनती है। आपने मौन साधना के विभिन्न आयामों को छुआ है। अलग-अलग तरह की मौन साधना- कई बार वाणी पर संयम-साधना और एक-एक बार ऐसा भी मौन कि किसी भी व्यक्ति की तरफ देखना भी नहीं। मंदिर तक जाना भी तो दृष्टि मात्र जमीन पर। एक बार मंदिर प्रतिष्ठा के बाद आपने 240 दिन की मौन साधना की। वह भी साधारण मौन साधना नहीं। 'कठिनतम एकांत मौन व्रत।' माँ भगवती का प्रिय रंग लाल। लाल वस्त्रों में 240 दिन तक पूरा मौन। न आंखों से किसी को देखना, न लिखित या दृष्टि से, इशारों से कोई संवाद। इतने लंबे समय तक किसी से कोई संवाद किए बिना, किसी की ओर दृष्टि किए बिना, किसी भी व्यक्ति को देखे बिना ध्यानस्थ रहना, प्रतिदिन पूजा-अर्चना और आराधना करना। मंत्र साधना जारी रही पूरी तन्मयता से। पूरा ध्यान माँ की तरफ - माँ पद्मावती की तरफ। 48वें दिन से हर दिन माँ पद्मावती ने आपको अपने विभिन्न रूपों में दर्शन दिए- आध्यात्मिक एवं दार्शनिक मार्गदर्शन किया। श्री बसंत गुरुजी ने माँ की हर छवि, हर दृश्य, हर रूप को चित्रांकित कर दिया। 48वें दिन से 72वें दिन तक यह क्रम चलता रहा। माँ के 23 रूपों के दर्शन करके धन्य हो गए। साधना के अंतिम दिन माँ ने 108 हाथों से आशीर्वाद प्रदान किया। उस विश्व रूप को देख स्वयं श्री बसंत गुरु विस्मित हो गए। उन्होंने अपने को धन्य समझा। माँ के इस सुंदर जगत जननी जगदात्री आशीर्वाद प्रदान करने वाली छवि को भी उन्होंने अंकित कर दिया। सत्य तो यह है कि माँ को इतने रूपों में एवं अंतिम रूप 108 हाथों के साथ साधारण व्यक्ति नहीं देख सकता। उस शक्ति-प्रकाश का सामना हर व्यक्ति नहीं कर सकता- मात्र संपूर्ण साधक ही उसे प्रत्यक्ष देख सकता है एवं देखकर स्वयं प्रकाशित हो सकता है। ■

चमत्कारी है श्री नागराज मंदिर

जब मंदिर के लिए भूमि की बात आई एवं माँ ने स्वप्न में निर्देश देते हुए 'दो ताड़ वृक्ष, 14-14 फल एवं बीच में नागराज की उपस्थिति एवं उनके द्वारा दिशा दर्शन का उल्लेख किया - यहां नागराज का प्राकृतिक प्रारंभिक स्थान है। यह भूमि त्यागी, तपस्वी साधक-साधकों की भूमि रही है - नागराज यहां पहले से स्थान की परिक्रमा करते रहे हैं एवं क्षेत्रपाल की भूमिका निभाते हैं। स्वयं मां पद्मावती एवं धरणेन्द्र देव नाग के रूप में दर्शन दे चुके हैं। श्री वसंत गुरुजी के जीवन में ऐसी अनेक घटनाएं घटित हो चुकी हैं। सांप के बिल (अनथिल) अपने आप में अनोखे हैं और इनमें 108 छिद्र हैं। अनेकानेक चमत्कार यहां हुए हैं एवं नागराज का स्थान अतिथिगृह, गुरुजी के ध्यानकक्ष के बिल्कुल पीछे है-जहां आने-जाने के लिए पगडंडी एवं छाया के लिए छप्पर, बैठने के लिए सीमेंट का फर्श बनाया जा चुका है। दर्शक यहीं से तीर्थ दर्शन की शुरुआत करते हैं। कहते हैं कि श्रद्धा भक्ति से प्रार्थना करने वाले की मनोकामना सिद्ध होती है। हवन में साक्षात माता के दर्शन डॉ. वसंत गुरुजी पंद्रह श्रद्धालुओं के साथ माँ पद्मावती के सामने हवन कर

रहे थे - हवन संपूर्ण विधि - विधान, पवित्रता के साथ हो रहा था - उसमें संपूर्ण भक्ति एवं समर्पण था -हवन की अंतिम आहुति के साथ एक ज्योति तेज हुई एवं साक्षात् माँ पद्मावती प्रकट हुई - माँ के दर्शन पा उपस्थित श्रद्धालुओं ने अपने-आपको धन्य माना। एक बार नवरात्रि की पूजा के दौरान कृष्णगिरि श्री पार्श्व पद्मावती शक्तिपीठ तीर्थ धाम के पद्मावती मंदिर में कुमकुम की वर्षा हुई-सर्वत्र कुमकुम ही कुमकुम था। रेतीले टीलों की तरह फैला वह कुमकुम सबके लिए आश्चर्य का विषय था। 108 जोड़े पति-पत्नी साथ बैठकर माँ पद्मावती की पूजा कर रहे थे - डॉ. वसंत गुरुजी विधि-विधान के साथ यज्ञ करवा रहे थे। बीच में माँ पद्मावती की प्रतिमा भी - साक्षात् माँ की उपस्थिति थी। माँ के सामने जब दीप प्रज्ज्वलन का समय आया तब सभी दीप अपने आप एक साथ ज्योतिर्मय हो गए - यह एक आश्चर्य ही था- किंतु था माँ पद्मावती का चमत्कार ही। प्रायः हर बार यज्ञ के समय, विशेष पूजा-हवन करने के समय मंदिर परिसर में कुछ विशेष घटित होता रहता है। पूज्य डॉ. वसंत गुरुजी का सानिध्य, पूजा-भक्ति का कार्यक्रम चल रहा था कि तभी अलग-अलग समय में चार से पांच महिलाओं के हाथ में केसर, कुमकुम व हीरा-पन्ना प्रकट हुए। कुछ इस तरह के चमत्कार आश्चर्य में डालने वाले ही हैं, किंतु यह मां पद्मावती के प्रभाव से हो रहा था एवं हो रहा है। ■

कलियुग में जहां साक्षात स्वर्ग है वह कृष्णगिरि तीर्थ है

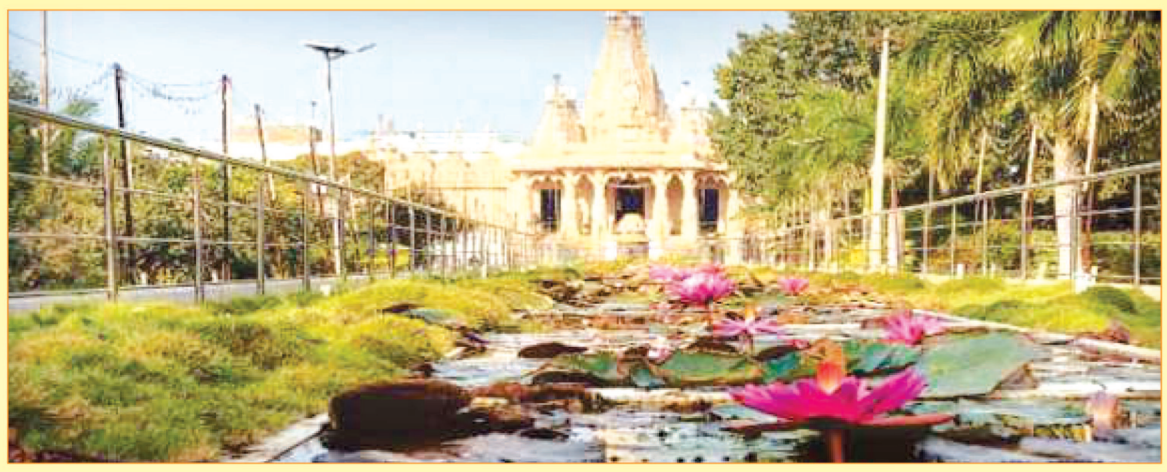

भारत का एक सुंदर द्रविड़ सभ्यता का प्रतीक प्रदेश 'तमिलनाडु' है - भारत के दक्षिण छोर पर बसा हुआ प्राचीन संस्कृति, सभ्यता और कला का माना हुआ क्षेत्र। यहां के कला युक्त मंदिर विश्व विख्यात हैं। भारत के एक ओर उत्तर में जहां हिमालय की पर्वत श्रेणियां हैं, तो वहीं दक्षिण में कन्याकुमारी और उससे छूता हुआ सागर तट-जहां अरब सागर, हिन्द महासागर और बंगाल की खाड़ी- इन सागरों का संगम है। स्वामी विवेकानंद का ध्यान एकांत क्षेत्र कनयाकुमारी जहां उनकी स्मृति में भव्य स्मारक का निर्माण हुआ है -अपनी विचित्र आभा के लिए अपने ढंग का विश्व में महत्वपूर्ण स्मारक है। कन्याकुमारी, नागरकोविल, तंजावुर, श्री रंग, कांचीपुरम, तिरुवन्नामलै, बेलूर, चिदम्बरम, कुम्भकोणम, तंजावुर, श्री रंग, तिरुचिरापल्ली, रामेश्वर के साथ-साथ अब कृष्णगिरि के विख्यात मंदिर भारतीय शिल्पकला एवं स्थापत्य कला की सर्वश्रेष्ठ कृतियां हैं। तमिलनाडु को शिल्प प्रदेश, मंदिरों का गढ़ कहा जाए तो अतियुक्ति न होगी। यहां के मंदिर, देवालय कलाकारों की अनवरत कला-साधना, तपस्या, एकाग्रता, कार्यनिष्ठा एवं कुशलता के सुपरिणाम हें। कृष्णगिरि एवं अन्यत्र मंदिरों को देखकर लगता है कि क्या मनुष्य के हाथ इतने विशाल कलापूर्ण मंदिरों का निर्माण कर सकते हैं? ऐसे समृद्ध देश के समृद्ध प्रदेश का समृद्ध शहर है- कृष्णगिरि और इसे प्रसिद्धि मिली है अनेक श्री विभूषित डॉ. वसंत विजयजी के कारण। कृष्णगिरि को श्री बसंत गुरुजी की जन्मभूमि होने का श्रेय तो प्राप्त है ही साथ ही उनकी कर्मभूमि भी है यह -कर्मठ कर्म, कठिनतम तप-साधना एवं अपने रचनात्मक कार्यों से उन्होंने इसे धर्म भूमि-पावन भूमि भी बना दिया है। चारों तरफ पर्वत श्रेणियां एवं इन पर्वत श्रेणियों के बीच बसा एक शहर कृष्णगिरि बेंगलोर से करीब 91 किलोमीटर, चेन्नई से 250 किमी, धर्मपुरी से 41 किलोमीटर, जोलारपेट से 45 किलोमीटर एवं तिरुपात्तुर से 38 किलोमीटर की दूरी पर बेंगलूर-चेन्नई हाइवे पर स्थित है। हवाई जहाज से बेंगलूर इंटरनेशनल एयरपोर्ट अथवा चेन्नई मिनमबाकम एयरपोर्ट पहुंचा जा सकता है और वहां से सडक़ मार्ग द्वारा कृष्णगिरि। रेल की भी सुविधा है-सरकारी व प्राइवेट बसों की कमी नहीं है। टैक्सी या निजी वाहन से भी पहुंचा जा सकता है। कृष्णगिरि भारत के सभी मुख्य स्थानों से सडक़ मार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है- सडक़ें भी चौड़ी एवं सुविधाजनक हैं। मंदिर परिसर में सुविधाजनक ठहरने की व्यवस्था है तो शहर में भी कुछ अच्छे विश्रामगृह, होटल हैं। भोजन के लिए मंदिर में जहां व्यवस्था है, वहीं शहर में भी अच्छे रेस्टोरेंट व कैफटीरिया हैं।

कुछ भी असम्भव नहीं- 27 मार्च 2003 के दिन माँ ने स्वप्न में आकर 5 मई 2003 के दिन 'कुम्भाषिक' मनाने का आदेश दिया। 27 मार्च और एवं 5 मई के बीच बस कुछ ही दिन थे और इन कुछ दिनों में बहुत कुछ करना था। इतने कम समय में मंदिर का निर्माण हो पाना सहज तो नहीं था, पर आदेश था वह भी माँ का, इसलिए विश्वास था कि माँ की इच्छा है तो काम भी होगा ही एवं समय पर होगा। बिना प्रतीक्षा किए वे काम में लग गए। आर्किटेक्ट को बुलवाकर निर्माण के बारे में बातचीत की और 27 लाख में काम होना निश्चित हुआ। उस समय इतनी धनराशि उनके पास नहीं थी। इसलिए उन्होंने आर्किटेक्ट को अगले दिन आकर पैसे ले जाने को कजा। आर्किटेक्ट ने अपनी पूरी टीम को काम पर लगा दिया। आर्किटेक्ट के चले जाने के बाद श्री बसंत गुरुजी चिंता में पड़ गये। उन्होंने अगले दिन आर्किटेक्ट को पैसे देने का कह तो दिया किंतु उतने की व्यवस्था उस समय नहीं थी। लेकिन माँ पर अटूट विश्वास था कि वह कोई-न-कोई मार्ग जरूर बताएगी। अगले दिन बेंगलूर के एक भक्त ने गुरुजी के दर्शन किए, जिन्होंने कुछ दिनों पहले अपनी व्यथा सुनाई थी। वे अपनी पत्नी की बीमारी से बहुत परेशान थे। काफी चिकित्सा हो चुकी थी - यूट्रस के कैंसर की दवाएं लेने के बाद भी मुक्ति नहीं मिली थी। जीवन एवं मृत्यु के बीच संघर्ष चल रहा था। उनके आने के पिछले दिन ही यज्ञ संपन्न हुआ था। यज्ञ कुण्ड से गुरुजी ने पवित्र भस्म को अपने हाथ में लिया, फिर एक बार पूरी श्रद्धा से माँ पद्मावती से प्रार्थना की एंव भक्त को भस्म देते हुए कहा कि हर एक घंटे के बाद पानी में भस्म का एक भाग मिलाकर पत्नी को पिलायें। भक्त ने जैसा बताया गया था वैसा ही किया। यह कुण्ड से दी गई भस्म उन्होंने अपनी पत्नी को प्रति घंटे पानी के साथ दी। पत्नी ने भी पूरी श्रद्धा से उसे स्वीकार किया। पत्नी पूर्ण स्वस्थ हो गई। डॉक्टर की रिपोर्ट के अनुसार यूट्रस कोशिकाओं में कैंसर नहीं था - वह ठीक हो चुका था - स्वयं डॉक्टर को भी आश्चर्य हो रहा था। वही भक्त गुरु चरणों में उपस्थित थे एवं उनके साथ थी - एक धनराशि। भक्त ने गद्गद् होते हुए कहा- 'आपका आभार शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता। रिपोर्ट देखकर स्वयं डॉक्टर भी हैरान हो गए जो कैंसर अंतिम चरण में पहुंच चुका था, वहां अब कैंसर का कोई नामोनिशान नहीं था। कृपा मंदिर के लिए मेरी यह छोटी-सी भेंट स्वीकार करें।' वह भेंट 27 लाख रुपये की थी। आर्किटेक्ट भी आ चुके थे और अन्य श्रद्धालु भी। यह अप्रत्याशित घोषणा भी - सब कुछ जिस तरह हुआ, जब हुआ तो आश्चर्य होना तो स्वाभाविक ही था। श्री बसंत गुरुजी को माँ ने की निराश नहीं किया। माँ की अनुकम्पा से असंभव भी संभव हो गया। श्री बसंत गुरुजी अपनी आराध्य माँ पद्मावती के प्रति कृत-कृत्य थे। यह एक चमत्कार ही था।वैसे कुल 13 केंद्र माने गए हैं, जिनमें 6 मुख्य केंद्र (चक्र) मुख्य हैं। साधना के दौरान जीवन के उद्देश्य को जाना, पहचाना। अब आपको सब कुछ साफ-साफ दिखाई देने लगा। आपने अंतिम सत्य को जाना। जीवन के रहस्य को समझा। अपने पिछले जन्म को स्वयं ने देखा। पुनर्जन्म की बात पर विश्वास तो था ही, किंतु जब स्वयं ने अपने ज्ञान चक्षुओं से यह सब देखा कि वे पिछले जन्म में क्या थे? पूर्व जन्म में भी श्री बसंत गुरुजी एक योगी थे - शिव योगी, जो नर्मदा के किनारे गुजरात में ज्योतिरलिंगम की पूजा-आराधना किया करते थे। इस जन्म में उन्होंने पूजा-आराधना, उपासना का विधि-विधान किसी से सीखा नहीं, बल्कि सब जानते हैं, यहां तक कि पारंगत हैं। साधु, सन्यासी, महात्मा आपसे विधि-विधान के बारे में राय लेते हैं। इससे यह लगता है कि आपका आध्यात्मिक जीवन पहले से ही निर्धारित था एवं बहुत कुछ आपको पूर्व जनम से प्राप्त है। अनेकानेक सिद्धियों के साथ श्री बसंत गुरुजी कृष्णगिरि लौटे। उन कंदराओं-गुफाओं में रहे और साधना की, जहां तापमान शून्य डिग्री से नीचे चला जाता है। हिमालय की साधना यात्रा सफल रही।

हिमालय की गोद में सत्य की खोज में- हिमालय की कंदराओं में, पहाडियों में आपने गहनतम साधना की। एक रात आपको एक योगी से संकेत मिला कि हिमालय में आकर मिलो। आपने हिमालय की यात्रा की। जब आप ऋषिकेश में ठहरे हुए थे, वहां आपने स्वप्न देखा और निर्देशानुसार आप बद्रीनाथ पांडुकेश्वर स्थान पर रात में गए। वहां से राहुलेश्वरजी, जहां एक दिव्य आत्मा, बढ़ी हुई दाढ़ी वाले योगी-महात्मा के दर्शन हुए, जो सैकड़ों वर्षों से हिमालय की कंदराओं में ही रह रहे थे-उनकी दिव्य दृष्टि, उनके व्यक्तित्व की आभा से आप अत्यन्त प्रभावित हुए - उन्होंने श्री बसंत गुरुजी को संतत्व की दीक्षा प्रदान की। हिमालय की पहाडियों में आपने गहनतम कठोर साधना की, ध्यान किया। यहीं पर वह स्थान है जहां साधना में आपके छः चक्र जागृत हुए। शक्ति चक्र केंद्र-पृष्ठरज्जु के निचले सिरे पर (नीला रंग), आनंद चक्र केंद्र - हृदय के पास (हरा रंग), विशुद्धि चक्र केंद्र - कण्ठ का मध्य भाग (पीला रंग), श्री दर्शन चक्र केंद्र - दोनों आंखों के बीच भृकुटि का मध्य भग (लाल रंग), ज्ञान चक्र केंद्र - सिर के ऊपर का भाग (स्वर्णिम रंग) एवं ज्योति चक्र केंद्र - ललाट का मध्य भाग (श्वेत रंग)।

मंदिर निर्माण- मंदिर निर्माण का कार्य गति से चल रहा था। भगवान श्री शक्ति पार्श्वनाथ एवं माँ शक्ति पद्मावती के भव्य देवालय का निर्माण कार्य प्रगति पर था। इसकी ऊंचाई 85 फीट की है, आकार-प्रकार सब में यह विशाल है, संपूर्ण कलात्मक कृतित्व का नमूना है यह और साथ ही संपूर्ण शांत एवं आध्यात्मिक वातावरण। जैसा माँ का आदेश था, निर्माण कार्य निर्धारित समय पर संपन्न हो गया था और मंदिर तैयार था- कुम्भाषिक के लिए। निर्धारित समय पर काम पूरा हो जाना और वह भी इतने कम समय में इतना बड़ा काम हो जाना- देखने व सुनने वाले सबके लिए तो आश्चर्य की ही बात है, किंतु ऐसा हो रहा था, ऐसा हो रहा है और आगे भी होता रहेगा। जहां इतनी प्रभावशाली, दयालु, कृपालु माँ बैठी हो वहां काम तो होना ही है। ■

संकलनः नरेंद्र जैन
स्थानीय संपादक
फ्रीलांसर
मोबा. 94068 36777

स्वत्वाधिकारी रामगोपाल इन्वेस्टमेंट प्रा. लि. हेतु लेसी एंगेज मीडिया प्रा.लि. के लिए आशुतोष उपाध्याय द्वारा 6/54, फिरोज गांधी प्रेस काम्प्लेक्स, इंदौर से प्रकाशित एवं नवभारत प्रेस भोपाल प्रा.लि. , फिरोज गांधी प्रेस कॉम्प्लेक्स इंदौर से मुद्रित. समूह संपादक क्रांति चतुर्वेदी*, *समाचार चयन के लिए पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत जिम्मेदार, फोन/फैक्स- 4096718 RNI Reg. No.7590/60